पाठ 6

मित्रता

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में आती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान–पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल–मेल हो जाता है। यह हेल–मेल बढ़ते–बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले, चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता।

ऐसे लोगों के साथ रहना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों के साथ रहना और बुरा है जो अपनी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्रायः बहुत कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाए तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्रायः विवेक से कम काम लेते हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि लोग एक घड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण–दोषों को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी–ही–अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस – ये ही दो–चार बातें

किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते हैं कि मैत्री का उद्देश्य क्या है, क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है। यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिससे आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। एक प्राचीन विद्वान का वचन है, ''विश्वासपात्र मित्र से बहुत रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साह होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि हमें उत्तमता से जीवन निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की–सी निपुणता और परख होती है। अच्छी–से–अच्छी माता का–सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न व्यक्ति को करना चाहिए।

छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है। पीछे के जो स्नेह बंधन होते हैं, उनमें न तो उमंग रहती है, न उतनी खिन्नता। बाल मैत्री में जो मग्न करने वाला आनंद होता है, वह और कहाँ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा आपसी विश्वास होता है! हृदय से कैसे–कैसे उद्गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनंदमय दिखाई पड़ता है और भविष्य के संबंध में कैसी लुभाने वाली कल्पनाएँ मन में रहती हैं। कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना होता है।

'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल–पुथल का भाव भरा हुआ है; किंतु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत–से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे; पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन की झंझटों में चलता नहीं। सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति, ये ही दो–चार बातें देखकर मित्रता की जाती है, पर जीवन संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे–छोटे काम ही हम निकालते जाएँ, पर भीतर–ही–भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चा पथ प्रदर्शक के समान होना चाहिए। जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति–पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि–लाभ को दूसरा अपना हानि–लाभ समझे।

मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है, ''उच्च और महान कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मान बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।'' यह कर्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़ चित्त और सत्य संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा

था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

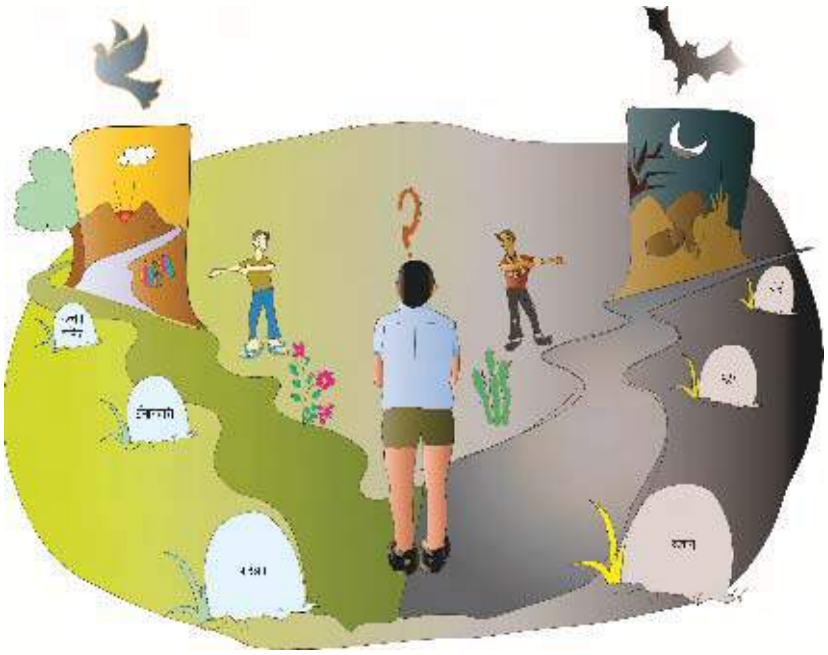

जो बात ऊपर मित्रों के संबंध में कही गई है, वही जान–पहचान वालों के संबंध में ठीक है। जान–पहचान के लोग ऐसे हों, जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनंदमय बनाने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं। मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खाने के लिए समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते हैं, न कोई बुद्धिमानी या विनोद द्वारा हमें ढाढ़स बँधा सकते हैं, न हमारे आनंद में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं, तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे।

आजकल जान–पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है, जो उसके साथ थियेटर देखने जाएँगे, नाच–रंग में जाएँगे, सैर सपाटे में जाएँगे, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान–पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी, तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन–रात अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाएगी। इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस पर ज़िंदगीभर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत–से लोग तो इसे अपना दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत–से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ीभर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी–ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में नहीं पड़नी चाहिए। चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई

अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्रायः सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं। एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लड़कपन में कहीं से बुरी कहावत सुनी थी, जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आए, पर बार–बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार–बार हृदय में उठती हैं और बंधती हैं। अतः तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो। ऐसा न हो कि पहले–पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा। अथवा तुम्हारे चरित्रबल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे–धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते–होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले–बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते–होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो। एक पुरानी कहावत है –

''काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय।
एक लीक काजर की लागि है पे लागि है।''

–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

शब्दार्थ

हतोत्साह	–	जिसमें उत्साह न रहा हो।	पथ प्रदर्शक	–	रास्ता दिखाने वाला।
निष्कलंक	–	बेदाग, निर्दोष	खिन्नता	–	दुख
विवेक	–	भले–बुरे की पहचान	परिणत	–	बदल जाना
धुन	–	लगन			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. छात्रावस्था में किसकी धुन सवार रहती है?
2. लेखक ने कौन–से ज्वर को सबसे भयानक बताया है?
3. हमारे आचरण पर किसका प्रभाव पड़ता है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. जीवन की औषध है–
   (क) अकूत धन (ख) उच्च पद
   (ग) सुंदर रूप (घ) विश्वासपात्र मित्र ( )
2. सुग्रीव ने मित्र के रूप में चुना–
   (क) राम को (ख) बालि को
   (ग) रावण को (घ) अंगद को ( )
3. हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का उपाय है–
   (क) खूब सोना (ख) भरपूर भोजन
   (ग) एकाकी रहना (घ) बुरी संगति से बचना ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) युवा पुरुष प्राय : .....से कम काम लेते हैं।
(ख) सच्ची मित्रता में उत्तम.....की–सी निपुणता और परख होती है।
(ग) आजकल .....बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है।
(घ) मित्र सच्चा.....के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. जीवन की सफलता किस पर निर्भर करती है?
2. कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक क्यों कहा गया है?
3. पाठ के अनुसार किस प्रकार की बातें जल्दी ध्यान पर चढ़ती है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सच्ची मित्रता की क्या विशेषता होती है?
2. मित्र बनाने में कैसी सावचेती जरूरी है?
3. हमें अपने मित्रों से क्या आशा रखनी चाहिए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मित्र का क्या कर्तव्य बताया गया है?
2. हम बुराई के भक्त कैसे बन जाते हैं?
3. आशय स्पष्ट कीजिए – 'काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय, एक लीक काजर की लागि है पे लागि है।'

भाषा की बात

1. कम खर्च करने वाला = मितव्ययी
   इसी प्रकार आप भी नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए –
   (क) जो नीति का ज्ञाता हो
   (ख) जिस पर विश्वास किया जाए

(ग) जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो
(घ) दूसरों को राह दिखाने वाला
(ड.) जो पका हुआ न हो
(च) जो मन को अच्छा लगता हो

2. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
कच्ची मिट्टी, जीवन निर्वाह, स्नेह बंधन, उथल–पुथल, जीवन–संग्राम

3. 'अपरिपक्व' शब्द में मूल शब्द परिपक्व है। 'अ' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द बन गया – 'अपरिपक्व'। आप नीचे दिए गए शब्दों को पढ़कर मूल शब्द व उपसर्ग पहचानकर लिखिए।

उपसर्ग युक्त शब्द
अपवित्र
कुमार्ग
अपरिमार्जित
कुसंग

'अ' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए – शिक्षा, चल, योग्य, कारण, सह्य, सफल, शुद्ध।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए

अवनति	कमाना
मित्र	रूठना
प्रशंसा	बुराई
शुद्ध	दूर

5. नीचे दिए गए रेखांकित पदों के कारक पहचानकर उनके नाम लिखिए–
(क) वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे।
(ख) वह अपने भाग्य को सराहता रहा।
(ग) एक बार एक मित्र ने मुझसे यह बात कही।
(घ) वह धरती पर गिर पड़ा।

उक्त कारक चिह्न लगाकर आप भी एक–एक नया वाक्य बनाइए।

पाठ से आगे

1. 'मेरा प्रिय मित्र' विषय पर एक निबंध लिखिए।
2. जीवन में अच्छे लोग भी मिलते हैं और बुरे भी। ऐसी किसी घटना का वर्णन कीजिए, जिसमें आपके किसी मित्र ने आपको अच्छा कार्य करने हेतु प्रेरित किया हो।
3. पाठ में सुग्रीव एवं श्री राम की मित्रता का संदर्भ आया है। ऐसे ही अन्य उदाहरण तलाशिए, जिसमें मित्रता का आदर्श प्रस्तुत किया गया हो।
4. ऐसी 10 विशेषताओं की सूची बनाइए; जिनको आप अपने मित्र में पाना चाहते हैं? इस बात पर भी

मनन करें कि क्या अपने मित्रों के प्रति आप इन मानकों पर खरा उतरते हैं।

यह भी करें

1. आपके कई मित्र होंगे जिनके साथ आप रोज पढ़ते–खेलते हैं। कुछ मित्र ऐसे भी होंगे जो अन्य शहरों–गाँवों में रहते हैं। ऐसे मित्रों से आप पत्र, दूरभाष अथवा नवीन तकनीकी साधन; जैसे–एसएमएस, ई–मेल, सोशल नेटवर्क आदि के माध्यम से संपर्क में रहते होंगे। कहीं दूर रहने वाले ऐसे ही किसी मित्र को पत्र लिखकर उसे मित्रता के महत्त्व से अवगत करवाइए।
2. मित्रता से संबंधित किसी रोचक कविता अथवा कहानी तलाश कर उसे बाल सभा में सुनाइए।

यह भी जानें

आपने दैनिक पत्रों व बाल पत्रिकाओं में 'बाल पत्र मित्र क्लब' के बारे में पढ़ा होगा। यह मित्रता पत्रों के माध्यम से दो दूर रहने वाले बच्चों को जोड़ देती है। आप भी ऐसे ही किसी 'बाल पत्र मित्र क्लब' के सदस्य बनकर पत्रों के माध्यम से अपने विचारों–अनुभवों को साझा करें।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

सो अत्थे जो हत्थे तो मित्तं जंणिरन्तरं वसणे।
तं रुअं जत्थ गुणा तं विष्णाणं जींह धम्मो।।
धन वही है जो हस्तगत है, मित्र वही जो निरंतर विपत्ति में साथ देता है,
रूप वही है, जहाँ गुण है और विज्ञान वही है, जहाँ धर्म है।